UP Board Notes Class 6 Hindi Chapter 10 ईदगाह (मंजरी)

वकील साहब ..... डाल दी गई।

संदर्भ – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'मंजरी' से महान साहित्यकार मुंशी प्रेमचन्द जी द्वारा लिखित 'ईदगाह' नामक कहानी से लिया गया है।

प्रसंग – ईदगाह से लौटने के बाद बच्चों, खासकर नूरे के खिलौने के टूटने का सरस वर्णन है।

व्याख्या – वकील महान प्रतिष्ठा वाला व्यक्ति होता है; अतः उसके लिए द्वार में दो खूटियाँ गाड़कर उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा गया। पटरे पर सुन्दर कालीन बिछाया गया। इसके बाद पटरे पर उसे रखा गया, मानो वह राजा भोज का सिंहासन हो। अदालत में गर्मी से बचने के लिए खसे की टटियाँ और विद्युत् पंखे लगे होते हैं। इस बात का ध्यान रखते हुए नूरे ने अपने खिलौने 'वकील' के लिए बॉस का पंखा मँगाकर हवा.करना शुरू कर दिया। पंखे की टक्कर से वकील ऊपर से नीचे गिर पड़े, मानो वे स्वर्गलोक से मृत्युलोक में आ पड़े हों। वे मिट्टी के तो थे ही, बिलकुल मिट्टी हो गए। बहुत शोर मचा, क्योंकि वकील साहब पंचतत्व में विलीन हो गए। उनकी हड्डियाँ घूरे के ढेर पर फेंक दी गईं।

पाठका सार (सारांश)

आज ईद आई है। गाँव में हलचल है। सभी ईदगाह जाने की तैयारी में हैं। लड़के ईदगाह जाने की खुशी में सबसे प्रसन्न, मगन हैं। हामिद भी अपनी दादी से ईदगाहे जाने की जिद कर रहा है। उसके माँ-बाप नहीं हैं। वह दादी अमीना की गोद में सोता है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, टोपी भी पुरानी है, फिर भी वह प्रसन्न है। . लोग गाँव से मेले की ओर चले। हामिद भी अपने दोस्तों के साथ निकल पड़ा। सभी अपने पैसे गिन रहे हैं। किसी के पास बारह पैसे हैं, किसी के पास पन्द्रह परन्तु हामिद के पास केवल तीन पैसे हैं, फिर भी वह सबसे ज्यादा प्रस्न्न है। ईदगाह पर बहुत भीड़ है। लाखों लोग एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हैं। और घुटनों के बल बैठ जाते है। अत्यन्त अपूर्व दृश्य है।

नमाज खत्म होने पर सब गले मिलते हैं। बच्चे मेले का आनन्द लेने लगते हैं। महमूद, मोहसिन आदि बच्चे घोड़ों और ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा होता है, क्योंकि उसके पास केवल तीन पैसे हैं। अब बच्चे खिलौने तथा मिठाइयाँ खरीदते हैं। हामिद दूर खड़ा है। वह साथी बच्चों से नाराज होता है; क्योंकि किसी ने उसे एक भी मिठाई नहीं दी।

हामिद ने एक दुकानदार से तीन पैसों में एक चिमटा खरीद लिया और उसे कंधे पर रख लिया; मानो वह उसकी बन्दूक हो। महमूद बोला कि चिमटा खिलौना नहीं है। हामिद ने अपने चिमटे को बहादुर शेर बताया।

आखिरकार, सब बच्चों ने हामिद को विजेता माना। वे सब बहुत पैसे खर्च करके भी काम की चीज नहीं खरीद सके। हामिद खुश था। उसे विश्वास था कि दादी चिमटा देखकर खुश होगी। यह चिमटा उसका रुस्तमे-हिन्द था, सब खिलौनों का बादशाह । चिमटा लेने के लालच में हामिद को महमूद ने केला खाने को दिया।

https://www.evidyarthi.in/

ईदगाह जाने वाले ग्यारह बजे लौट गए। हामिद भी उन्हीं के साथ था। सबं बच्चों के खिलौने धीरे-धीरे टूट गए और घूरे के ढेरों पर पहुँच गए, लेकिन हामिद का चिमटा सही-सलामत उसके हाथ में था। अमीना ने चिमटा देखकर गुस्से से उससे पूछा कि किसी और चीज के स्थान पर चिमटा क्यों उठा लाए। तुमने अन्य बच्चों की तरह खाया-पिया क्यों नहीं । हामिद ने अपराधी भाव से कहा, “तुम्हारी अंगुलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने यह खरीद लिया।” अमीना का क्रोध स्नेह में बदल गया। उसका मन गद्गद हो गया। उसने आँसू बहाते हुए दामन फैलाया और हामिद को दुआएँ दीं।

https://www.evidyarthi.in/